Or 2. शुष्क क्षेत्रो में वायु एक महत्वपूर्ण अपरदन के दूत के रूप में कार्य करते हैं। आँशिक रूप से वायु के साथ जल की भी भूमिका होती है। संसार के लगभग 1/3 भाग पर मरुस्थल पाए जाते हैं जहाँ वायु के प्रभाव से बनी स्थलाकृतियाँ देखने को मिलती हैं।

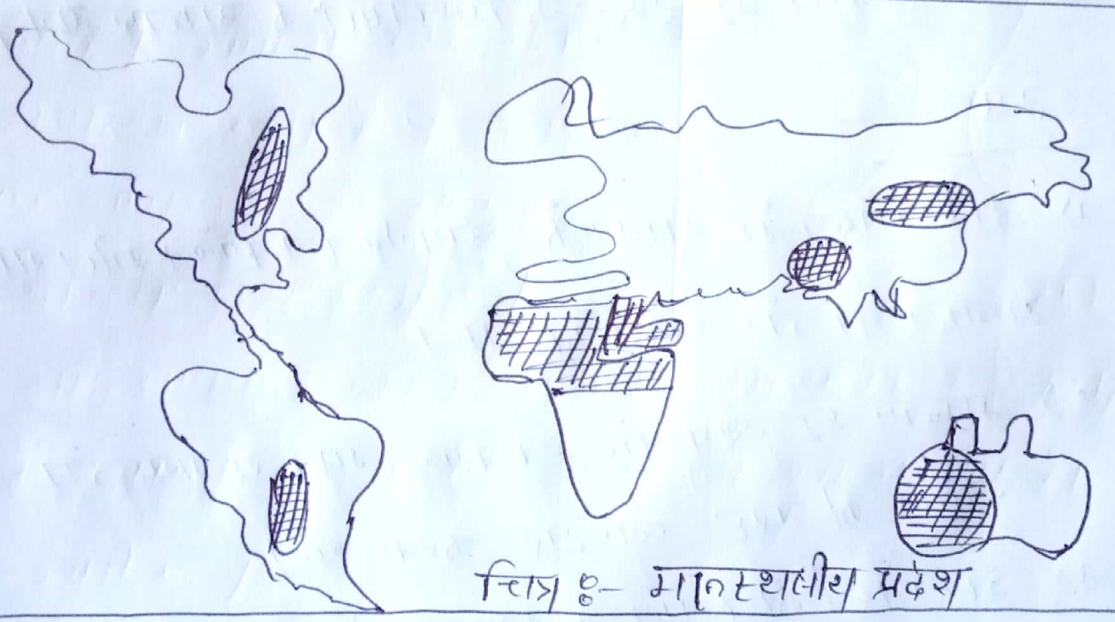



चित्र :- मरुस्थलीय प्रदेश

पवन का अपरदनात्मक कार्य भौतिक एवं यांत्रिक प्रक्रमों द्वारा होता है। मरुस्थल में जल द्वारा भी कुछ रासायनिक क्रिया अवश्य होती है। पवन का अपरदन का कार्य अपवहन, अपघर्षण, सन्नीघर्षण के रूप में सम्पन्न होती है।

पवन के द्वारा निक्षेप में पवन की गति तथा उसके मार्ग में उत्पन्न व्यवधान महत्वपूर्ण कारक हैं।

## अपरदन एवं निक्षेपण से निर्मित स्थलाकृति —

### अपवाहन से निर्मित स्थलाकृति —

1> यारडंग
2> ज्युगेन
3> छत्रक शिला

**यारडंग** —— यारडंग का निर्माण उस मरुस्थलीय प्रदेश मे होता है जहाँ कठोर एवं मुलायम चट्टाने वैकल्पिक रूप से लंबवत अवस्थित रहती है। जब पवन इसके सतह से टकराती है तो कठोर चट्टानो का अपरदन मुलायम चट्टानो की अपेक्षाकृत कम होता है।

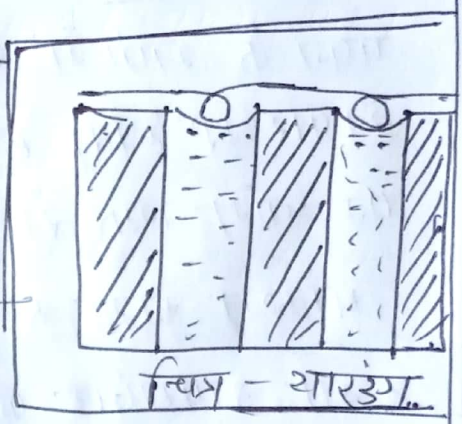


चित्र - यारडंग

Ex:— पश्चिम ऑस्ट्रेलिया का seveen Heelin park

**ज्युगेन** —— ज्युगेन का निर्माण उस मरुस्थलीय प्रदेश में होता है जहाँ पर कठोर व मुलायम चट्टाने वैकल्पिक रूप से क्षैतिज अवस्थित होती है।

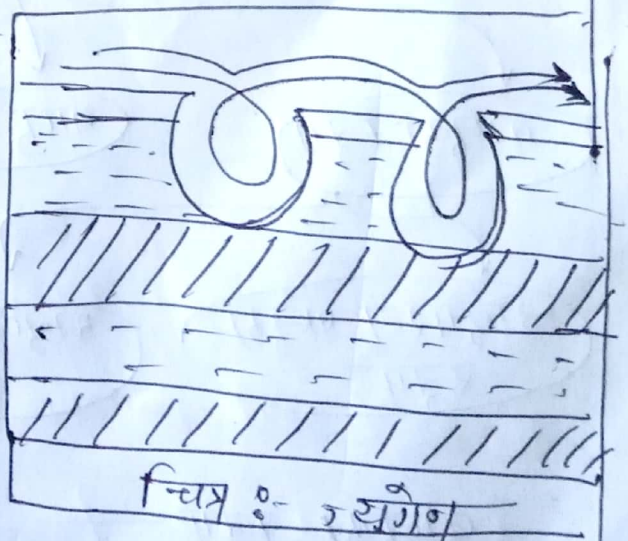


चित्र :- ज्युगेन

• जब सतह के कठोर चट्टानो के बीच संधि मौजूद

तो संधि के सहारे पवन अपना अपरदन का कार्य शुरु करता है एवं नीचे स्थित मुलायम चट्टानो का तेजी से अपरदन करता है।

उदा॰ — कालाहारी, पैटागोनिया मरुस्थल।

**छत्रक शिला** — जब प्रचालित पवन के मार्ग में कठोर चट्टान अवस्थित होता है तो उस चट्टान पर चारो तरफ से अपघर्षण प्रक्रिया काम करती है।



चित्र :- छत्रक शिला

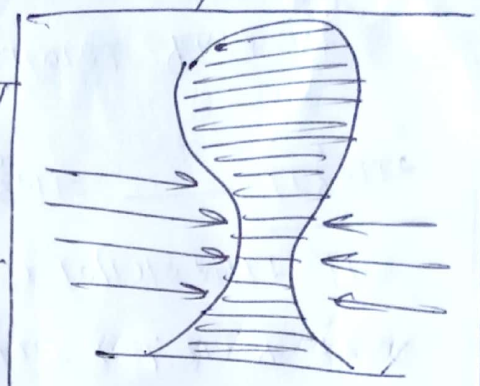

• यह अपघर्षण प्रक्रिया 15 m तक अत्यधिक कार्य करती है परन्तु 30 m के बाद इसकी सक्रियता नगण्य हो जाती है।

**निक्षेपण से निर्मित स्थलाकृती —**

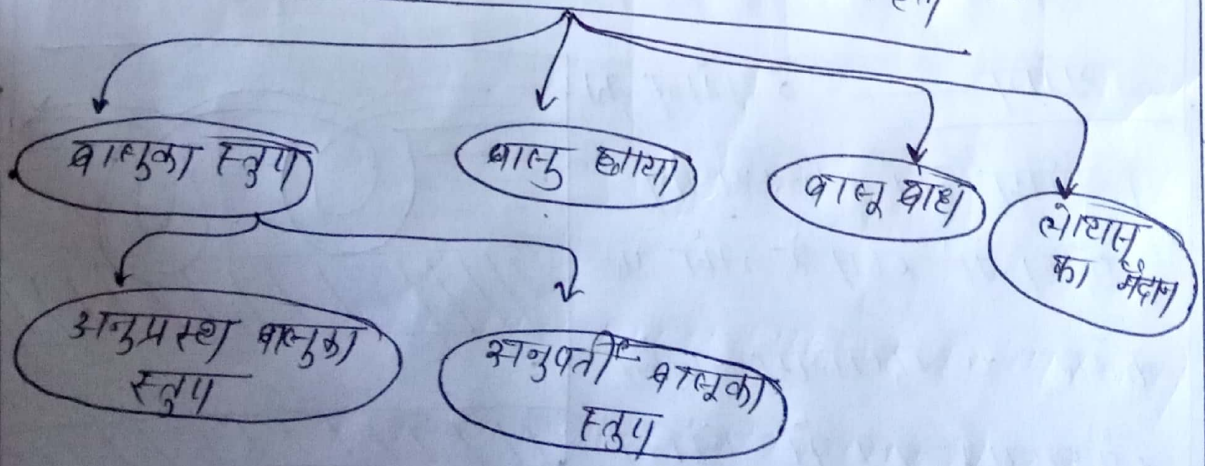

- बालुका स्तुप
  - अनुप्रस्थ बालुका स्तुप
  - अनुदैर्ध्य बालुका स्तुप
- बालु छाया
- बालु बांध
- लोयस का मैदान

**बालुका स्तुप** — बालुका स्तुप का निर्माण मार्ग में व्यवधान उत्पन्न होने के कारण

होता है।

>> अनुप्रस्थ बालुका स्तूप वायु मार्ग के अनुप्रस्थ दिशा मे निर्मित होते है। जिसे बरखान कहा जाता है।

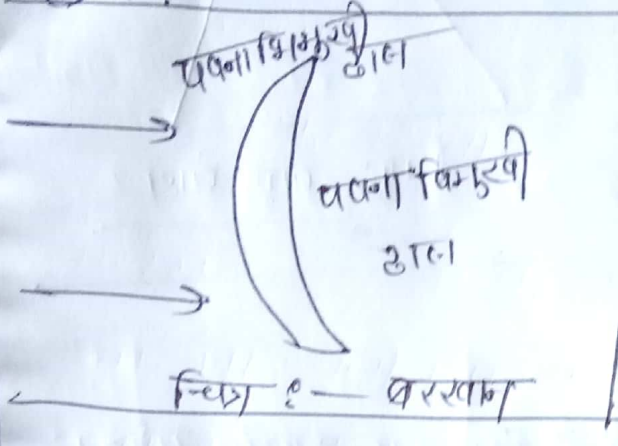

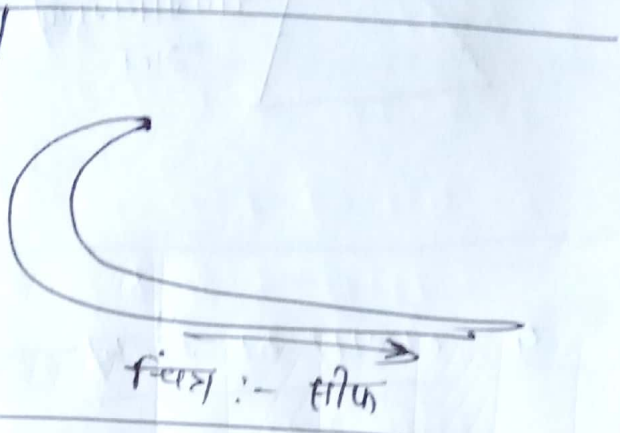




चित्र :- बरखान



चित्र :- सीफ

>> अनुवर्ती बालुका स्तूप का निर्माण उस समय होता है जब बालुका स्तूप के एक भुजा के सहारे पवन ज्यादा सक्रिय हो जाता है। परिणामस्वरूप एक भुजा ज्यादा लंबी हो जाती है।

2. बालू छाया :-

जब मरुस्थलीय प्रदेश मे प्रवाहित पवन के मार्ग मे कोई अवरोधक उत्पन्न हो जाता है जैसे- चट्टान या पेड़, तो वह बालू छाया का निर्माण करता है।

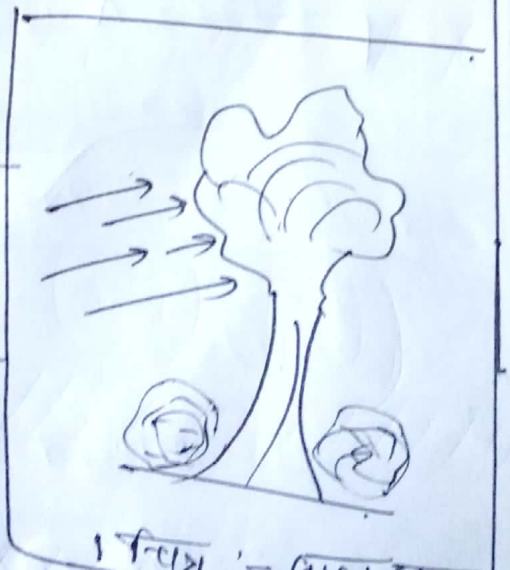



चित्र :- बालू छाया

3. बालू बाँध — जब बालुका स्तूप का उपरि भाग टूटकर नीचे गिर जाता है तो

तो इस प्रकार के स्थलाकृती को बालू बांध कहते है।

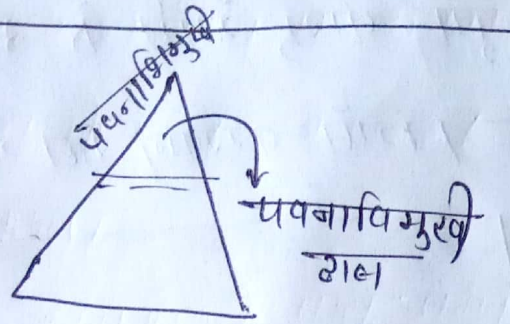

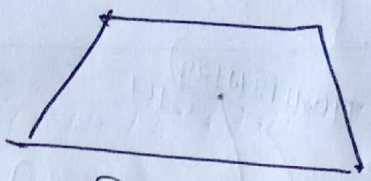




Fig:- बालू बांध

4. लोयास का मैदान —

यह एकमात्र स्थलाकृती है जो मरुस्थलीय प्रदेश से बाहर निर्मित होती है। जब पवन की अपवहन क्षमता समाप्त हो जाती है तो वह वह बालू के अति सूक्ष्म कणों का निक्षेपण कर देती है।

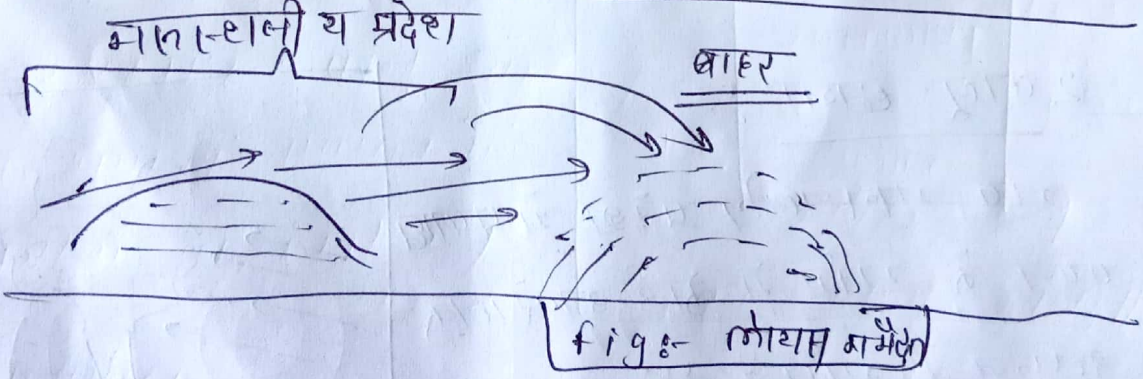




fig:- लोयस मैदान

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मरुस्थलीय प्रदेश में भी विभिन्न प्रकार की स्थलाकृती का निर्माण होता है।